ट्रक रेसिंग से बदलेगा भारतीय ट्रक ड्राइवरों का चेहरा

चेन्नई, 11 फरवरी (वार्ता)। भारतीय समाज में ट्रक ड्राइवरों को आमतौर पर हिकारत भरी नजरों से देखा जाता है लेकिन टीवन प्राइमा ट्रक रेसिंग चैंपियनशिप के तीसरे संस्करण से यह स्थिति बदलने जा रही है और अब भारतीय ट्रक ड्राइवरों को भी सम्मान की नजर से देखा जाएगा।टाटा प्राइमा ट्रक रेसिंग का तीसरा संस्करण 20 मार्च को ग्रेटर नोएडा स्थित फार्मूला वन बुद्ध इंटरनेशनल सर्किट में होगा और इस बार एक नये अभूतपूर्व प्रयोग के तहत 12 भारतीय ट्रक ड्राइवरों को बुद्ध सर्किट में इंडिया ट्रक रेसर ट्राफी के लिये उतारा जाएगा।

चैंपियनशिप के पहले दो संस्करणों में सिर्फ ब्रिटिश ड्राइवरों ने हिस्सा लिया था लेकिन इस बार भारतीय ट्रक ड्राइवरों के लिये बकायदा एक अलग रेस आयोजित की जाएगी जिनका चयन यहां मद्रास होटल स्पोर्ट्स ट्रैक पर चल रहे भारतीय ट्रक ड्राइवरों के प्रशिक्षण एवं चयन कार्यक्रम से किया जाएगा। टाटा मोटर्स का भारतीय ट्रक ड्राइवरों के लिये एक अलग रेस कराने का लक्ष्य समाज में उन्हें सम्मान दिलाना है। टाटा मोटर्स के वरिष्ठ उपाध्यक्ष (कर्मिशियल व्हीकल) आर रामाकृष्णन ने भारतीय ट्रक ड्राइवरों के लिये महत्वकांक्षी कार्यक्रम की जानकारी देते हुये बताया कि ट्रक चलाने का प्रोफेशन भारतीय अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है लेकिन ट्रक ड्राइवरों को सम्मान की नजर से नहीं देखा जाता। इस रेस को लाने का उद्देश्य भारतीय ट्रक ड्राइवरों को यह एहसास कराना है कि वे भी समाज में कोई स्थान रखते

हैं। ट्रक रेसिंग में उतरने जा रहे भारतीय ड्राइवर इस नये बदलाव से काफी खुश नजर आ रहे हैं। ये सभी ड्राइवर पहली बार विमान में सवार हुये थे और अब मद्रास मोटर स्पोर्ट्स ट्रैक पर ट्रेनिंग से गुजर रहे हैं। इन ड्राइवरों के परिवार भी इसे लेकर काफी रोमांचित हैं। ट्रक ड्राइवर मोहम्मद सिराज ने कहा पहली बार जब मैं ट्रेन में बैठा तो थोड़ी घबराहट हुई। लेकिन तब सोचा कि जो सबका होगा वही मेरा होगा।प्रोफेशनल रेसरों जैसी ड्रैस पहने संतोष यादव ने कहा कि उनके घरवाले और दोस्त बहुत खुश हैं जबकि मलकीत सिंह ने कहा कि यहां तक पहुचने के बाद उन्हें कुछ अच्छा करके दिखाना है। एक अन्य ड्राइवर आनंद ने कहा हमारी जिंदगी पहले बेहद खराब थी लेकिन ट्रक रेसिंग से जुड़ने पर लगता है कि यह बदलेगी। टाटा ट्रक रेसिंग कार्यक्रम के सलाहकार विक्की चंडोक ने इस अवसर पर बताया कि भारतीय ट्रक ड्राइवरों का ट्रेनिंग कार्यक्रम जनवरी में शुरू किया गया था और पहले चरण में 132 ड्राइवर थे। इसके बाद इनमें से 64 ड्राइवर दूसरे चरण में और फिर 26 ड्राइवर तीसरे चरण में लाए गये। इनमें से आखिरी 14 का चयन होगा जिनमें 12 ट्रक ड्राइवर 20 मार्च को बीआईसी में रेस में उतरेंगे। इन ड्राइवरों में ज्यादातर उत्तर और पूर्व से हैं। आखिरी चरण तीर में पहुंचे ड्राइवरों में 16 उत्तर से और नौ पूर्व से हैं।

आखिरी 14 ड्राइवरों को बीआईसी में अंतर्राष्ट्रीय विशेषज्ञों से ट्रेनिंग दिलाई जाएगी। चंडोक ने साथ ही कहा कि चैंपियनशिप के अगले साल होने वाले चौथे चरण में भारतीय ट्रक ड्राइवरों को ब्रिटिश ड्राइवरों के साथ उतारा जाएगा जबकि इस बार के विजेताओं को यूरोपीय ड्राइवरों के साथ मुकाबला करने का मौका मिलेगा।भारतीय ट्रक ड्राइवरों के लिये 45 वर्ष से कम की उम्र और भारतीय नागरिकता की अनिवार्यता रखी गई है। इसके अलावा उन्होंने कोई एक्सीडेंट न किया हो, वजन में अधिक न हों और उनके पास कम से कम एक वर्ष प्राइमा ट्रक चलाने या पांच वर्ष ट्रक चलाने का अनुभव हो। यह भी दिलचस्प है कि हिंदी भाषी क्षेत्रों के ट्रक ड्राइवरों को दक्षिण भारत के इंस्ट्रक्टर सिखा रहे हैं।